उपशास्त्री
राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० दि० - फ्रा

पुस्तक का नाम - 'दिगंत - भाग - 2
शीर्षक - 'उषा'
कवि - शमशेर बहादुर सिंह

प्रश्न:- "बहुत काली सिल जरा से लाल केसर की जैसे धुल गई हो।" इन पंक्तियों का बिम्ब स्पष्ट करें।

उत्तर:- प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ प्रयोगधर्मी कवि शमशेर-बहादुर सिंह की काव्य कृति के 'उषा' शीर्षक से उद्धृत हैं। शमशेर बहादुर सिंह मूल रूप से प्रयोगवादी कवि हैं। यही कारण है कि वह व्यक्तिगत अनुभूति और उसकी भावात्मक अभिव्यक्ति पर बल देते हैं। भावाभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों तथा बिम्बों का आधार लिया है; किन्तु कवि में युद्ध अनुभूति से अधिक रोमांटिक भाव मिलता है। इस रोमांटिक भाव को आधुनिक जीवन का बोध का परिणाम नहीं, बल्कि छायावादी प्रभाव कहा जायेगा। अतः कवि के बिम्ब प्रकृति का रूपांकन और व्यक्तिगत अनुभूति का समान दर्शन करते हैं। कवि ने अपनी सम्पूर्ण कविता में नाना बिम्बों को प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में 'उषा' का चित्रण है। उस कविता में भाव बिम्ब का प्रयोग किया गया है। कवि ने भाव-बिम्बों मूर्त का मूर्तिकरण किया है।

उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के रूपों का तुलनात्मक वर्णन करते हुए 'उषा और नभ के रूप-सौन्दर्य का वर्णन किया है। रचना-प्रक्रिया की दृष्टि से शमशेर बहादुर सिंह मानवतावादी भावना के कवि हैं। अपनी संवेदना और ज्ञान के द्वारा प्रकृति-रूप का मनोहारी वर्णन किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 13/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०अ० सं० महावि० खुरवसेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए
शास्त्री प्रथम खण्ड - पुस्तक का नाम - जयद्रथ-वध
रा० भाषा हिन्दी कवि - मैथिलीशरण गुप्त
अ० द्वि० - पत्र

महत्वपूर्ण पदों का भावार्थ :-

" सब लोग हिलमिल कर चलो, पारस्परिक ईर्ष्या तजो,
भारत न दुर्दिन देखता, मचता महाभारत न जो ।।
हो स्वप्नतुल्य सदैव को सब शौर्य सा खो गया,
हा ! हा ! इसी समराग्नि में सर्वस्व स्वाहा हो गया।

भावार्थ :- प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि महाभारत के परिणाम की ओर संकेत करते हुए कहता है कि अब तुम सब लोगों को एक साथ मिलकर चलना चाहिए। क्योंकि महाभारत के युद्ध में भारतवर्ष का शौर्य वैभव आदि सभी जल गया है।

कवि कहता है कि हे भारतवासियों हम सभी लोगों को आपसी ईर्ष्या-द्वेष की भावना को त्यागकर आपस में मेल-जोल से रहना चाहिए। भारत वर्ष को वह बुरा दिन न देखना पड़ता यदि यहाँ पर महाभारत का भयंकर युद्ध न होता। क्योंकि इस युद्ध में भारतवर्ष की सर्वाधिक वीरता जो आज स्वप्न के समान समझी जाती है वह सब नष्ट हो गई। अर्थात उस समय के जिन व्यक्ति की वीरता आज स्वप्न बन प्रतीत होती है, वे सभी लोग उस युद्ध में मारे गये। इस शौर्य के साथ-साथ इस देश का वैभव भी इस युद्ध रूपी अग्नि में जल कर नष्ट हो गया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 13/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ऊ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

वाले बुद्धिजीवियों का अभाव हो गया है। कवि का कथन बिलकुल सत्य है कि यह संसार मायवी लोगों से भरा-पड़ा है। ऐसे संसार में सभी अपने अधिकार की बात तो अवश्य करते हैं। परन्तु कर्तव्य पालन की बात लोगों को समझ में आती ही नहीं है। धोखा और छल के सिवा इस संसार में बचा ही क्या है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ
13/12/20

2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या -

पथिक काव्य

शास्त्री द्वितीय खण्ड - अ० द्वितीय-पत्र

राष्ट्रभाषा हिन्दी

" शारीरिक वासना-तृप्ति का साधन जहाँ प्रणय है।
जहाँ शब्द चातुर्य सत्य है, स्वार्थ निर्णय है।
चलता है तूफान जहाँ हिंसा का हृदय-हृदय में।
मैत्री में विश्वास घात है, छल है छिपा विनय में।"

उत्तर:-

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ~~काव्य~~ 'पथिक' खण्ड काव्य से उद्धृत है। इसके रचयिता पंडित रामनरेश त्रिपाठी जी हैं। पथिक-प्रिया अपने पति को पुनः अपने साथ ले जाने का यत्न करती है। यह उसी प्रसंग से जुड़ी हुई पंक्तियाँ हैं।

व्याख्या- 'पथिक' अपनी प्रियतमा से कहता है कि तुम मुझे पुनः उसी संसार में वापस लौटने की जिद क्यों कर रही हो। तुम तो अच्छी तरह जानती हो कि यह संसार मायावी है, पाप की वहाँ प्रधानता है। यही कारण है कि इस भौतिक संसार को पाप लोक भी कहा जाता है। इसलिए पथिक कहता है कि अब उस संसार में जाना उचित नहीं है। यहाँ प्रेम के नाम पर शरीर की वासना की संतुष्टि होती है। जिस संसार में तुम मुझे ले जाना चाहती हो वहाँ चिकनी-चुपड़ी बातों की ही प्रमुखता दी जाती है। वहाँ तो सत्य का स्वरूप ही दिखाई नहीं पड़ता। यहाँ तो लोग भ्रम उत्पन्न करने वाली बातें करते हैं। सभी के मन में संघर्षों का तूफान मचा रहता है। दोस्ती में धोखा और विनय में छल छिपा रहता है। मैं ऐसे संसार में पुनः लौटना नहीं चाहता हूँ।

विशेष- कवि सांसारिक जीवन का दार्शनिक विवेचन करते हुए कहना चाहता है कि वास्तव में इस संसार में ईमानदार, कर्मनिष्ठ और प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रेमकरने

शेष आगे